# 5.1. संस्कृत में अनुवाद

किसी एक भाषा में अभिव्यक्त विचारों या भावों को दूसरी भाषा में ज्यों का त्यों रूपान्तरित करने को ही अनुवाद कहते हैं। अनुवाद करने की क्रिया में स्पष्ट शब्द, अर्थ तथा भावों का ज्ञान होना आवश्यक है। अनुवाद करने के लिए यह भी आवश्यक है कि मूल भाषा तथा दूसरी भाषा, जिसमें अनुवाद करना है का पूर्ण ज्ञान हो।

**'शिक्षा शब्दकोष' के अनुसार**, "अनुवाद मूल शब्दों और वाक्यांशों का यथासम्भव निकटतम मुहावरेदार तुल्यात्मक शब्द प्रदान करके प्रदत्त भाषा सामग्री को दूसरी भाषा में प्रतिपादन का कार्य है।"

**जर्मन विद्वान 'स्टार्म' के अनुसार**, "एक व्यक्ति एक शब्द का दूसरी भाषा में अनुवाद उसी समय कर सकता है, जबकि उसका वाक्य प्रयोग पर पूर्ण अधिकार हो। इसलिए वह अनुवाद करते समय उसे केवल समझता ही नहीं, अपितु उसका ठीक–ठीक प्रयोग भी जानता है।"

## 5.1.1. अनुवाद की उपयोगिता

अनुवाद से निम्नलिखित लाभ होते हैं–

1) अनुवाद द्वारा दो भाषाओं (मूल भाषा तथा अनूदित भाषा) का ज्ञान होता है।
2) दो भाषाओं (मूलभाषा तथा अनूदित भाषा) के व्याकरण से हम परिचित होते हैं।
3) शब्दकोश समृद्ध होता है।
4) अनुवाद की प्रक्रिया से संस्कृत भाषा और मातृभाषा में निकटता आती है तथा संस्कृत पठन की गति तीव्र हो जाती है।
5) अनुवाद द्वारा संस्कृत भाषा सरल, सरस, रोचक व प्रभावशाली बन जाता है।
6) मातृभाषा से संस्कृत में अनुवाद करने की प्रक्रिया में मनोवैज्ञानिक शिक्षण सूत्रों का अनुसरण किया जाता है।
7) संस्कृत भाषा हिन्दी भाषा की जननी है। इन दोनों भाषाओं में कई समानताएँ हैं यथा शब्दावली। इन दोनों भाषाओं की समानताएँ अनुवाद प्रक्रिया के माध्यम से समझी जा सकती हैं जिससे संस्कृत सरल हो जाता है।
8) अनुवाद प्रक्रिया से विभिन्न भाषाओं के साहित्य का ज्ञान होता है।
9) अनुवाद प्रक्रिया द्वारा सृजनात्मक क्षमता विकसित होती है।

## 5.1.2. संस्कृत में अनुवाद अभ्यास के प्रकार

संस्कृत में अनुवाद अभ्यास के तीन प्रकार हैं–

1) **संस्कृत से मातृभाषा में अनुवाद**–संस्कृत से मातृभाषा में अनुवाद करने का अभ्यास प्रारम्भिक स्तर से ही करना चाहिए। प्रारम्भिक स्तर पर संस्कृत भाषा की

शब्दावली सीमित होती है, अतः इस स्तर पर सरल तथा छोटे–छोटे वाक्य का अनुवाद करना चाहिए। धीरे–धीरे अभ्यास के बाद वाक्यों का कठिनाई स्तर बढ़ाना चाहिए।

2) **मातृभाषा से संस्कृत में अनुवाद**–मातृभाषा से संस्कृत भाषा में अनुवाद करने का अभ्यास भी प्रारम्भिक स्तर से ही किया जाता है। इसमें भी पहले छोटे वाक्य तथा उसके बाद बड़े वाक्य का किया जाता है। अध्यापक द्वारा अनुवाद कार्य का संशोधन भी किया जाता है ताकि छात्रों को उनकी ग़लतियाँ पता चल सकें।

3) **पुनर्नुवाद करना**–संस्कृत से मातृभाषा में तथा फिर मातृभाषा से संस्कृत में अनुवाद को पुनर्नुवाद कहा जाता है। इसमें छात्र अपने किए अनुवाद को संस्कृत के मूल अनुच्छेद से मिलाकर अपनी गलतियों को ठीक करता है। छात्र स्वयं अपनी गलतियो को जाँचता है जिससे उसकी निरीक्षण शक्ति बढ़ती है। अनुवाद की यह प्रक्रिया उच्च स्तर के छात्रों के लिए अधिक उपयोगी है।

## 5.1.3. अनुवाद के भेद

अनुवाद के तीन भेद होते हैं–

1) **अक्षरशः अनुवाद**–इसमें एक भाषा के शब्दों के स्थान पर समानार्थक दूसरी भाषा के शब्दों का प्रयोग किया जाता है। इसमें अनुवाद करते समय बहुत ध्यान से शब्दों का चयन करना चाहिए क्योंकि प्रत्येक भाषा के शब्द रूप व वाक्य रचना में अन्तर होता है। शब्दों के गलत प्रयोग से अर्थ में अन्तर हो सकता है। यह अत्यधिक प्रयोग की जाने वाली विधि है।

2) **छायानुवाद या भावानुवाद**–अनुवाद की इस शैली में एक भाषा के अनुच्छेद के सारांश को समझकर दूसरी भाषा में अनुवाद किया जाता है। इसमें प्रत्येक शब्द का अनुवाद नहीं किया जाता है। इससे व्यक्तियों की विचाराभिव्यक्ति तथा भावाभिव्यक्ति सशक्त होती है तथा भाषा ज्ञान भी बढ़ता है।

3) **तथ्यानुवाद**–अनुवाद की इस शैली में एक भाषा में व्यक्त भावों को संस्कृत भाषा में प्रकट करने का प्रयास किया जाता है। यह अनुवाद की उत्तम शैली है। इसमें मूल भाषा के भाव तथा शैली का निर्वाह किया जाता है। 'अनुवाद' इस तरह से किया जाता है कि ऐसा प्रतीत हो कि यह मूल रूप में लिखा गया है।

## 5.1.4. अनुवाद करते समय ध्यातव्य बिन्दु

अनुवाद करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए–

1) अनुवाद कार्य मानसिक स्तर के अनुसार होना चाहिए।
2) अनुवाद कार्य पाठ्य–पुस्तक में लिखित पाठों से होना चाहिए जिससे अनुवाद करने में सरलता होती है।
3) अनुवाद से पहले सामान्य वस्तुओं के नाम, उनके शब्द रूप तथा धातु रूप याद किया जाना चाहिए। अनुवाद कार्य में उचित अभ्यास अवश्य करना चाहिए।
4) अनुवाद कार्य में अध्यापक द्वारा संशोधन अवश्य किया जाना चाहिए। अनुवाद कार्य पहले मातृभाषा से संस्कृत में तथा उसके बाद संस्कृत से मातृभाषा में करना चाहिए।
5) अनुवाद में अभ्यास कार्य पर बल दिया जाना चाहिए।
6) अनुवाद करते समय शिक्षक को लगातार निरीक्षण करते रहना चाहिए तथा जरूरी दिशा निर्देश देने चाहिए।
7) अनुवाद शिक्षण से पूर्व व्याकरण के नियमों का पुनरावलोकन कक्षा में करा देना चाहिए। अनुवाद इस तरह किया जाना चाहिए कि भाषा का मूल रूप तथा शैली बनी रहे।